सालिम अली

सालिम अली (1896-1987)

सालिम अली मशहूर पक्षी विज्ञानी रहे हैं। पक्षियों की दुनिया को जानने-समझने के दीवाने! 12 नवम्बर सालिम अली का जन्म दिवस है। इस अवसर पर लाड अंकल उनसे हुई कुछ मुलाकातों को यहाँ याद कर रहे हैं।

पी. एम. लाड

मैं पहली बार सालिम अली से 1976 में मिला था। उन दिनों मैंने टिटहरी का उसके बच्चे के साथ एक फोटो खींचा था। टिटहरी जैसे चंचल, शर्मीले पक्षी का उसके बच्चे के साथ करीब से फोटो लेना बड़ी बात थी। मैंने बड़े गर्व से यह फोटो उन्हें दिखाया। फोटो को देखते ही वे बोले, "डोन्ट डू इट अगैन!" (फिर कभी ऐसा मत करना!)

क्या तुम्हें भी बच्चा घास से बँधा दिख रहा है?

"जी!" मैं बस इतना ही कह सका। वास्तव में हुआ यह था कि मैंने टिटहरी के बच्चे की एक टाँग को घास के तिनके से बाँध दिया था ताकि माँ-बच्चे का फोटो आसानी से लिया जा सके। तिनका मैंने बड़े करीने से बाँधा था। मैं नौसीखिया अपने को बहुत होशियार समझ रहा था पर उस्ताद की आँखों से मेरी चालाकी छुपी न रह सकी। उस दिन के बाद से मैंने हमेशा इस बात का ख्याल रखा कि पक्षी और बच्चों को कोई तकलीफ न हो और जहाँ तक हो सके घोंसले के पास फोटो न लिए जाएँ।

मेरी अगली मुलाकात उनसे हुई 1981 में। एक दिन बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी से डॉ. डेनियल का फोन आया। उन्होंने बताया कि सालिम अली खरमौर क्षेत्र देखने और अभ्यारण्य की सम्भावना तलाशने के लिए आ रहे हैं। हम सब अधिकारी बगलें झाँकने लगे। हमें बड़ा अफसोस हुआ कि हम खरमौर के बारे में कुछ भी नहीं जानते। तय हुआ कि अभी सालिम अली माण्डू में ही रुकें। जब कुछ समझ नहीं आया तो हम जावरा के विधायक भारत सिंह के यहाँ गए। जैसे ही हमने उनसे खरमौर के बारे में बात की वे बोले - बस पन्द्रह मिनट के भीतर खरमौर दिखा देते हैं। हमने झट से सालिम अली साब को खबर सुनाई। खरमौर को दूरबीन से देख वे झूम उठे। वे तीस-पैंतीस सालों बाद फिर से इसे देख रहे थे। उस दिन पहली बार मैंने खरमौर देखा था। उसे उछाल भरते हुए। मेंढक की तरह आवाज़ करते हुए। बाद में पता चला कि उस क्षेत्र के कई लोग उसकी अच्छी खासी जानकारी रखते थे।

इसी दौरान सालिम अली ने खरमौर के क्षेत्र को अभ्यारण्य घोषित करने की सलाह दी। 1981 से 84 तक हर साल वे खरमौर देखने रतलाम, धार ज़िलों में आते रहे। पक्षियों के अध्ययन के लिए रिंगिंग एक ज़रूरी चीज़ होती है। उन्होंने अपने हाथों से एक खरमौर को छल्ला पहनाया। खरमौर जून से लगभग 15 अगस्त तक पश्चिमी भारत में दिखाई देता है। आज तक प्रमाणिक रूप से नहीं पता कि बाकी के आठ महीने वह कहाँ बिताता है।

यैलोनेप्ड युहीना

दो इंच और जो मैं पीछे हुआ होता

पक्षियों को देख सालिम अली इस कदर दीवाने हो जाते कि किसी और बात का होश ही न रहता। इसकी एक मिसाल उनकी आत्मकथा *द फॉल ऑफ ए स्पैरो* में मिलती है ... किस्सा 1945 का है। मैं कैलाश-मानसरोवर की यात्रा में था। ... वो एक बड़ा सँकरा रास्ता था। उसके एक तरफ कई हज़ार फुट गहरी खाई थी और दूसरी तरफ 300 फुट नीचे खौफनाक आवाज़ें करती काली नदी।... इतने में वो नन्ही-सी चिड़िया दिखाई दी। कुछ दूर एक झाड़ी पे बैठी। यैलोनेप्ड युहीना - यही नाम है उसका! मेरे लैंस के दायरे में आते-आते वो ज़रा और आगे फुदक गई। उसे देखने के लिए मैं एक कदम पीछे हुआ।... अचानक महसूस हुआ कि एक छोटा-सा पत्थर मेरी एड़ी से सरका। पहाड़ी से टकरा-टकरा कर लुड़कने की उसकी आवाज़ देर तक कानों में आती रही। ... मैं मुड़ा... जो देखा उसने मेरे रोंगटे खड़े कर दिए। दो इंच और जो मैं पीछे हुआ होता तो मैं भी पत्थर के पीछे-पीछे होता।

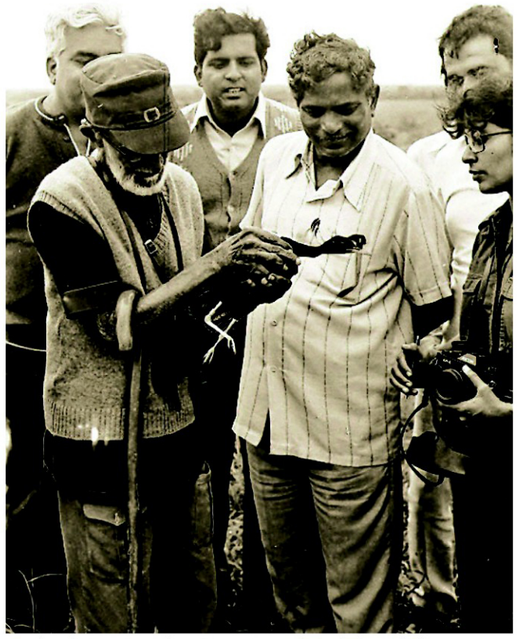

खरमौर को छल्ला पहनाते सालिम अली। उनके बाईं ओर खड़े हैं लाड अंकल।

1976 का एक वाकया तो भुलाए नहीं भूलता। सालिम अली जी के साथ मैं इन्दौर में अपने एक दोस्त के घर ठहरा था। इतने में दरवाज़े पर दस्तक हुई। एक शख्स, जो पेशे से इन्जीनियर था, अन्दर आया। मैंने सोचा वो सालिम अली से ही मिलने आया होगा। पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने कहा कि उसकी रुचि सालिम अली की दूरबीन में है। बाद में पता चलने पर सालिम जी बोले कि हो सकता है उसकी निगाह में दूरबीन ज़्यादा ज़रूरी हो। सभी अपनी रुचि के मुताबिक ही काम करते हैं।

इन्दिरा गाँधी से पुरस्कार प्राप्त करते सालिम अली (1976)

सालिम अली का खत इन्दिरा गाँधी के नाम

प्रिय इन्दिरा जी,

भरतपुर में चल रही अन्तर्राष्ट्रीय पक्षी संरक्षण परिषद की हाल की कॉन्फ्रेंस (3-6 दिसम्बर) में आए प्रतिभागी उस वक्त हैरान रह गए जब महाराज और उनकी बेटी की शादी में आए उनके मेहमानों ने झील की बत्तखों का ताबड़तोड़ शिकार करना शुरू किया। और यह तब हो रहा है जब हम जी-जान से उनके बचाव और संरक्षण में लगे हुए हैं! मुझे लगता है कि कत्लेआम का यह कार्यक्रम सुबह-शाम तब तक चलता रहेगा जब तक महाराजा के आखिरी मेहमान भरतपुर से रवाना नहीं हो जाते।

इस कॉन्फ्रेंस के मेज़बान और भारतीय प्रतिभागी होने के नाते हमारे लिए यह डूब मरने की सी स्थिति थी। उपस्थित लोगों को इस विरोधाभास के बारे में बतलाना हमारे लिए कितना शर्मनाक रहा होगा कि वो जगह जिसे हम पक्षियों के लिए स्वर्ग कहते आए हैं वहीं उनका इस बेरहमी से शिकार हो!

मैं जानता हूँ कि महाराजा ने भारतीय यूनियन (या इसके लिए जो भी सही शब्द है) के साथ "स्वीकृति की संधि" में एक खास धारा जुड़वाई थी कि केवल उनको और उनके मेहमानों को ही झील और उसके आसपास शिकार करने के अधिकार हों। सालों तक मैंने और मेरे जैसे कई देशी-विदेशी संरक्षणवादियों ने महाराजा को मनाने की कोशिश की है कि वे खुद ही शिकार छोड़ने की पहल करें। उन्होंने हर बार हमारे सुझाव पर बड़ी कड़ुवाहट से कहा है कि शिकार छोड़ने की बजाय वे इस अभयारण्य को ही बरबाद होते देखना ज़्यादा पसन्द करेंगे। यह एक ऐसी खास सुविधा है जिसे जल्द-से-जल्द गैर-ज़िम्मेदाराना हाथों से लिया जाए तो शायद कुछ ही लोगों को नाराज़गी होगी। वह भी केवलादेव घाना अभ्यारण्य के मामले में जिसे आपके पिता के भरपूर सहयोग से हम जैसे लोग अभी तक कई सारी मुश्किलातों से बचाते आए हैं।

सालिम अली

13 दिसम्बर 1969